Toppersnotes®
Unleash the topper in you

राजस्थान

उच्च न्यायालय (चतुर्थ श्रेणी)

राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर

भाग - 1

सामान्य हिन्दी एवं अंग्रेजी

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	वर्ण विचार	1
2	संज्ञा	5
3	सर्वनाम	7
4	क्रिया	8
5	विशेषण	15
6	समास	16
7	संधि	22
8	विलोम शब्द	38
9	पर्यायवाची	44
10	काल	46
11	वर्तनी शुद्धि	48
12	वाक्य रचना	61
13	मुहावरे	65
14	लोकोक्तियाँ	71
15	समश्रुत भिन्नार्थक शब्द	74
16	अनेकार्थक शब्द	77
17	वाक्य के लिए एक शब्द	80
18	Time and Tense (समय और काल)	86
19	Article (लेख)	90
20	Voice (वाच्य)	94
21	Model	98
22	Narration (कथन)	102
23	Antonyms & Synonyms (विलोम और पर्यायवाची शब्द)	111

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	One Word Substitution (एक शब्द प्रतिस्थापन)	123
25	Adjective (विशेषण)	146
26	Verb (क्रिया)	152
27	Shuffling of Sentences and Words	159

1 CHAPTER वर्ण विचार

भाषा – परस्पर विचार विनियम को भाषा कहते हैं ।

- भाषा संस्कृत के भाष् शब्द से बना है । भाष् का अर्थ है बोलना।
- भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है । वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर व अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण है।
- जैसे – हम शब्द में दो अक्षर (हम) एवं चार वर्ण (ह् अ म् अ) है ।

लिपि –किसी भाषा को लिखनें का ढंग लिपि कहलाता है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसकी निम्न विषेशताएँ है ।

(i) यह बाएँ से दायें लिखी जाती है ।
(ii) प्रत्येक वर्ण का एक ही रूप होता है ।
(iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात् जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है ।

व्याकरण – जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप एवं प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे व्याकरण कहते है ।

वर्ण – हिंदी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका विभाजन नहीं हो सकता।

किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है।

जैसे :– क्, च्, ट् अ, इ, उ

वर्ण के भेद :– 2 प्रकार है।

(i) स्वर वर्ण (ii) व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :– स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है। हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :– मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है।

1. मात्राकाल के आधार पर – 3 प्रकार है ।

(i) ह्रस्व स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण मे कम समय लगता है हस्व स्वर कहलाते है।

जैसे – अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या – 4)

नोट :– (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते है)

(ii) दीर्घ स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण मे मुल स्वर से अधिक समय/ दुगुना समय लगता है। वे दीर्घ स्वर कहलाते है। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, (कुल संख्या –7)

(iii) प्लुत स्वर – जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है । स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।

जैसे – अ३, आ३, इ३, ई३, उ३, ऊ३, ए३, ऐ३, ओ३, औ३,

(2) उच्चारण के आधार पर :– (2 प्रकार है)

(i) अनुनासिक स्वर – स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनो से बाहर निकलती है ।

नोट – अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।

जैसे – अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ, ऐं ओं औं

(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर – जब किसी स्वर का उच्चारण करनें पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/ निरनुनासिक स्वर कहलाता है।

बिना चन्द्रबिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ए, ऐ, ओ, औ,

(3) जिह्वा के आधार पर – (3 प्रकार है)

(i) अग्र स्वर :– उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग मे सर्वाधिक कम्पन होना ।

जैसे – इ, ई, ए, ऐ

(ii) मध्य स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन – अ

(iii) पश्च स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।

जैसे – आ, उ, ऊ, ओ, औ , ऑ

पहचान :– निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

अ – मध्य
इ ई ए ऐ – अग्र
आ उ ऊ ओ औ – पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर – 2 प्रकार है ।

(i) वृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना।

जैसे :– उ, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर–नीचे फैलना।

जैसे – अ, आ, इ, ई ए, ऐ

(5) मुखाकृति के आधार पर – 04 प्रकार है।

(i) संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना। जैसे – इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्द्ध संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोडा ज्यादा खुलना – ए, ओ

(iii) विवृत – उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा/पूरा खुलना। जैसे – आ

(iv) अर्द्धविवृत – उच्चारण करने पर मुँह का विवृत से थोडा कम खुलना।
जैसे – अ, ऐ, औ, ऑ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते है।
हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 मूल (33 + 2 उत्क्षिप्त) व्यंजन ध्वनियाँ होती है ।
जिनको तीन भागों में बाँटा गया है ।
(i) स्पर्श व्यंजन – (27) (मूल 25 + 2 उत्क्षिप्त)
(ii) अंतः स्थ व्यंजन – (04)
(iii) ऊष्म व्यंजन – (04)

(i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करते मुख से बाहर निकलती है वह स्पर्श व्यंजन कहलाते है ।
स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है –
(अ) 'क' वर्ग – क् ख् ग् घ् ड़्.
(ब) 'च' वर्ग – च् छ् ज् झ् ञ्
(स) 'ट' वर्ग – ट् ठ् ड् ढ् ण्
(द) 'त' वर्ग – त् थ् द् ध् न्
(य) 'प' वर्ग – प् फ् ब् भ् म्

(ii) अंतः स्थ व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियो में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है ।
कुल अन्तः स्थ व्यंजन – 4 है ।
जैसे :– य् व् र् ल्

(iii) ऊष्म व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह ऊष्म व्यंजन कहलाता है।
कुल ऊष्म व्यंजन – 4 है।
जैसे – श, स, ष, ह

संयुक्त व्यंजन – इसी श्रेणी मे 4 व्यंजन शामिल किये जाते है ।
क्ष – ष् + अ
त्र – त् + र + अ
ज्ञ – ज् + ञ्+ अ
श्र – श् + र् + अ

व्यंजनों का वर्गीकरण

व्यंजनों का वर्गीकरण – मुख्यतः 2 प्रकार का है ।
(1) उच्चारण स्थान के आधार पर
(2) प्रयत्न के आधार पर

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर –

स्वर – युक्त व्यंजन व उनका वर्गीकरण–

(अ) उच्चारण स्थान के आधार पर –

उच्चारण स्थान	नाम ध्वनि	वर्ग	व्यंजन	स्वर
कंठ	कंठ्य	क वर्ग	क ख ग घ ङ ह	अ आ
तलु	तालव्य	च वर्ग	च छ ज झ ञ य श	इ ई
मूर्द्धा	मूर्द्धन्य	ट वर्ग	ट ठ ड ण ड़ ढ़ ष र	ऋ
दाँत	दन्त्य	त वर्ग	त थ द ध न ल स	
ओष्ठ	ओष्ठ्य	प वर्ग	प फ ब भ म	उ ऊ
कंठ व तालु	कंठ्य–तालव्य			ए ऐ
दाँत व ओष्ट	दन्तोष्ठ्य		व	
कंठ व ओष्ठ	कंठोष्ठ्य			ओ औ
नासिक्य			ड़., ञ् ण् न् म्	

2) प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है –
(i) कंपन के आधार पर
(ii) श्वास वायु के आधार पर
(iii) उच्चारण के आधार पर

(i). कम्पन्न के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) **अघोष :–** वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वरतंत्रियो में कम्पन्न नहीं होता है अघोष कहलाते है। इसमें वर्ग का पहला,दुसरा वर्ण तथा श, स, ष आते है।

b) **घोष/सघोष :–** वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वर तंत्रियों मे कम्पन्न होता है घोष/सघोष कहलाते है
इसमे वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण तथा य. र, ल, व, ह और सभी स्वर आते है।

(ii). श्वास वायु के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) अल्प प्राण :– ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय कम वायु बहार निकलती हो, अल्प प्राण कहलाते हैं।

b) महाप्राण :– ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय अधिक वायु की आवश्यकता होती है, महाप्राण कहलाता है।

इसमे दुसरा, चौथा वर्ण तथा श,स,ब,ह आते है।

(iii). उच्चारण के आधार पर –

इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते है ।

a. स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
b. स्पर्श संघर्शी व्यंजन (4) – च, छ, ज, झ
c. संघर्षी व्यंजन (4) – ष, श, स, ह
d. नासिक व्यंजन (5) – ड., ञ, ण, न, म
e. उत्क्षिप्त व्यंजन (2) – ड, ढ
f. प्रकंपित व्यंजन (1) – र
g. पार्श्विक व्यंजन (1) – ल
h. संघर्षहीन व्यंजन (2) – य, व

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य (''वर्ण विचार'' से संबंधित)

- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है।
- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है।

	समानाक्षर स्वर	**संधि स्वर**
(i)	आ – अ + अ	ए – अ + इ
(ii)	ई – इ + इ	ऐ – अ – ए
(iii)	ऊ – उ + उ	औ – अ + ओ

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है।
- हिन्दी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) का प्रयोग किया जाता है, जिन्हे आगत/गृहीत व्यंजन कहा जाता है।
- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है।

क़ – क़रीब
ख़ – ख़ाना
ग़ – ग़म
ज़ – ज़रा
फ़ – फ़न, फ़ाइल (अंग्रेजी)

अंग्रेजी से गृहीत स्वर.
ऑ (é)
जैसे – कॉलेज, डॉक्टर

- हिन्दी भाषा में आगत व्यंजनो का आगमन अरबी/फारसी, अग्रेजी भाषा से हुआ है।
- हिन्दी भाषा में नुक्ता व्यंजन की शुरूआत का श्रेय हिन्दी विद्वान ''विप्रसाद सितारे हिंद'' को जाता है।
- काकल वर्ण के अन्तर्गत, (:) विसर्ग को शामिल किया जाता है।
- वर्त्स वर्णो में न, स, ल को शामिल किया जाता है।
- इसकी कुल संख्या चार होती है।
  (1) जिह्वा (2) अधरोष्ठ (नीचे का होंठ)
  (3) स्वर तंत्रियाँ (4) कोमल तालु
- तालु उच्चारण स्थान में आनें वाले वर्णो को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागो में विभाजित किया गया है।
- हिन्दी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है। क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वरों में जोड़ा जाता है व न ही व्यंजनों में अतः अयोगवाही वर्ण कहलाते है।
- हल् चिह्न (्) व्यंजन के स्वर रहित होनें का परिचायक है । स्वर रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर खड़ी पाई वाले व्यंजन चिह्नो की खड़ी पाई हटा दी जाती है। उसके अर्द्धरूप का प्रयोग किया जाता है।
  जैसे– विद्‌या, पाठ्‌य, अपराह्‌न, पट्‌टा आदि।

1. नांद या संवार वर्ण – सभी घोष वर्णों को ही कहा जाता है।
2. विवार या श्वास वर्ण – सभी अघोष वर्णों को ही कहा जाता है।
3. स्पृष्ठ वर्ण – सभी स्पर्श व्यंजन वर्णों को ही कहा जाता है।
4. ईशत्स्पृष्ट वर्ण – अन्तस्थ व्यंजन (य,र,ल,व) वर्णों को ही कहा जाता है।
5. ईशद्विवृत वर्ण – उष्म व्यंजन (ष, श, स, ह)
6. रक्त वर्ण –प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण
7. सोष्म व्यंजन वर्ण – प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण

नोट – हिन्दी वर्णमाला में मूल रूप से 11 स्वर व 33 व्यंजन सहित कुल 44 वर्ण होते है।

हिन्दी वर्णमाला की वर्तमान में अपवादित स्थिति को सारणी के माध्यम से समझें।

स्वर	व्यंजन	कुल
स्वर 11	व्यंजन 33	44
–	ड., ढ. + (2) (उत्क्षिप्त व्यंजन)	46
–	अं, अः + (2) (अयोगवाह)	48
–	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र + (4) संयुक्त व्यंजन	52
	.क ख़ ग़ ज़ .फ + 5 गृहीत व्यंजन	57

नोट – सर्वमान्य मत हिन्दी वर्णमाला में कुल 44 वर्ण होते हैं।

उत्क्षिप्त वर्ण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मूर्ध्दा को स्पर्श कर तुरन्त नीचे गिरती है, उन्हे उत्क्षिप्त वर्ण कहते हैं।

जैसे – ड. ढ.

नियम – 1. यदि शब्द की शुरूआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है ।

जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया, ढक्कन, डाली

नियम – 2. यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है।

जैसे – पण्डित, बुड्ढा, अड्डा, खण्ड, मण्डल आदि ।

- उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिन्दु आता है।
  जैसे – पढ.ाई, लड.ाई, सड़क, पकड़ना, ढूँढना आदि।

रकार/रेफ या र संबंधित नियम

नियम 1. – यदि र् के बाद व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र् का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखा जाता है।

जैसे – कर्म, धर्म, वर्ण, दर्शक, स्वर्ग, अर्थात्, पुनर्जन्म, पुनर्निमाण, आशीर्वाद।

नियम 2. – यदि र् से पहले व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के मध्यय में लिखा जाता है।

जैसे – प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, भ्रम, भ्रष्ट, भ्राता

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER संज्ञा

परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते है।
- जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
- अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है। सुंदरता एक गुण का नाम है।

संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद है –

संज्ञा

- व्यक्तिवाचक
- जातिवाचक
  - समूह वाचक
  - द्रव्य वाचक
- भाववाचक

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

- व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नही।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओ, समाचार–पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।

2. जातिवाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु–पक्षियों, फल–फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्रा
हनुमानगढ, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड़	रोड़, सड़क

3. भाववाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

- प्रायः गुण–दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
- भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती हैं।
  1. जातिवाचक संज्ञा से
  2. सर्वनाम से
  3. विशेषण से
  4. क्रिया से
  5. अव्यय से

जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्वान	विद्वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढापा
पुरूष	पुरूषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरता
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालाक	चालाकी
निपुण	निपुणता

शिष्ट	शिष्टता
गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य / शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन / कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट / थकान
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान
सुनना	सुनवाई
कमाना	कमाई
गाना	गान
चमकना	चमक
उड़ना	उड़ान
पीना	पान

अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

- 'अन' प्रत्यय से जुड़ें शब्द भाववचाक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।
  जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन
  कारण कृ + अन
- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा** – ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल आदि।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा** – किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
   जैसे – दूध, घी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, ऑक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।
   नोट – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।
   आजाद – भारत की स्वतंत्रता में चन्द्रशेखर आजाद ने महत्त योगदान दिया था।
   सर दार – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़नें की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
   गाँधी – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था।

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।
  जैसे –
  गरीब गरीबों
  बड़ा बड़ों
  अमीर अमीरों

3 CHAPTER सर्वनाम

परिभाषा – भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता, एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वनाम कहलाता है।

- सर्वनाम शब्द सर्व + नाम के योग से बना है जिसका अर्थ है – सब का नाम।
- सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य में सहजता आ जाती है।
  जैसे – अमर आज विद्यालय नहीं आया क्योंकि वह अजमेर गया है।
- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद – सर्वनाम के कुल 06 भेद हैं

1. पुरुषवाचक
2. निश्चय वाचक
3. अनिश्चय वाचक
4. संबंध वाचक
5. प्रश्न वाचक
6. निजवाचक

1. पुरुषवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग वक्ता, श्रोता, अन्य तीसरा (कहनें वाला, सुनने वाला, अन्य) जिसके लिए कहा जाए, के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम को भी तीन भागों में बाँटा गया है

पुरुषवाचक सर्वनाम

↓ उत्तम पुरुष ↓ मध्यम पुरुष ↓ अन्य पुरुष

(i) उत्तम पुरुष – बोलने वाला / लिखने वाला
जैसे – मैं, हम, हम सब।

(ii) मध्यम पुरुष – श्रोता/सुनने वाला
जैसे – तू, तुम, आप, आप सब।

(iii) अन्य पुरुष – बोलने वाला व सुनने वाला जिस व्यक्ति या तीसरे के बारें में बात करें वह अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – यह, वह, ये, वे, आप।

2. निश्चय वाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जो पास या दूर स्थित व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चितता का बोध कराते हैं। वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
पास की वस्तु के लिए – यह, ये।
दूर की वस्तु के लिए – वह, ये।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु के बारें में निश्चतता का बोध नहीं होता हैं। अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – कोई

- सजीवता के लिए – 'कोई' का प्रयोग
  उदाः रमन को कोई बुला रहा है।
- निर्जीवता के लिए – 'कुछ' का प्रयोग
  उदाः दूध मे कुछ गिरा है।

4. संबंधवाचक सर्वनाम – दो उपवाक्यों के बीच आकर संज्ञा या सर्वनाम का संबंध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने वाले सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – जिसकी लाठी उसकी भैंस।
जो मेहनत करेगा वो सफल होगा।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम – जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता हैं वह प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – वहाँ गलियारे से होकर कौन जा रहा था ?
कल तुम्हारे पास किसका पत्र आया था ?

6. निजवाचक सर्वनाम – ऐसे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – आप, स्वयं, खुद, अपना।
जैसे – मैं अपने आप चला जाऊँगा।

- सर्वनाम में आप शब्द का प्रयोग विभिन्न सर्वनामों में किया जाता है जिसका सही प्रयोग निम्न तरीकों से जाना जा सकता है।
  (i) अगर 'आप' शब्द का प्रयोग 'तुम' शब्द के रूप में किया जाता है तो – मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।
  (ii) 'आप' शब्द का प्रयोग स्वयं के अर्थ में होने पर – निजवाचक सर्वनाम होगा।
  (iii) आप शब्द का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति से परिचय करवाने के लिए प्रयुक्त हो तो वाक्य में अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।

Unleash the topper in you

4 CHAPTER क्रिया

- वाक्य में जिस शब्द या शब्द–समूह से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते है, जैसे – खाना, पीना, पढना, सोना, जाना।

- क्रिया का अर्थ हैं करना। क्रिया के बिना कोई वाक्य पूर्ण नहीं होता हैं। किसी वाक्य में कर्ता, कर्म तथा काल की जानकारी भी क्रिया पद के माध्यम से होती हैं। हिंदी भाषा की जननी संस्कृत हैं तथा संस्कृत में क्रिया रूप को 'धातु' कहते हैं।

- **धातु** – हिंदी क्रिया पदो का मूल रूप ही 'धातु' है। धातु में 'ना' जोड़ने से हिंदी के क्रिया पद बनते है।

  जैसे – पढ़ + ना = पढ़ना, उठ + ना = उठना।
  - मोहन खाना खा रहा है।
  - हवा बह रही है। (करना–हवा बहने की क्रिया कर रही है।)

उपर्युक्त वाक्यों मे 'खा रहा है' 'बह रही है' क्रियापद है।

क्रिया के भेद

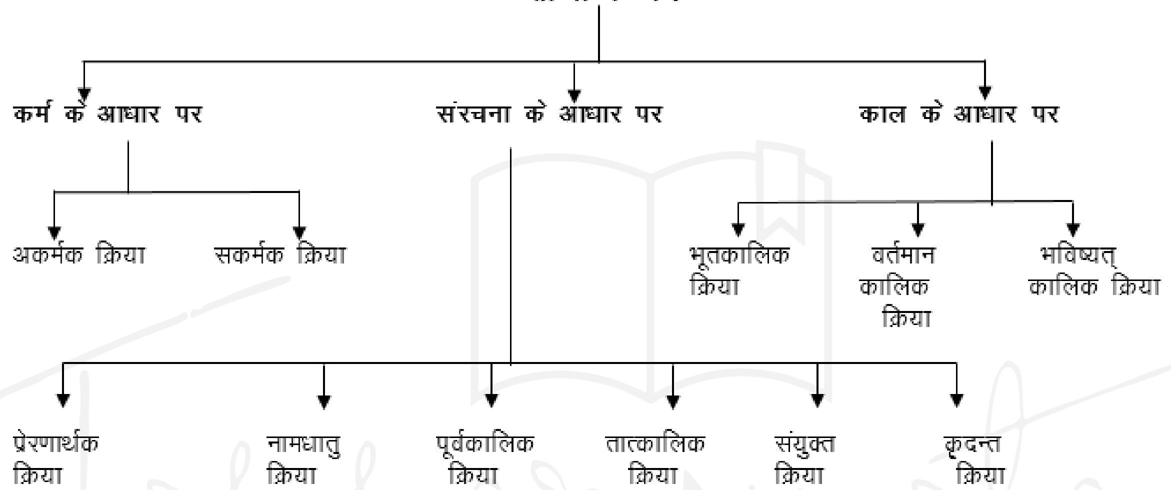

वाक्य मे कर्म की संभावना के आधार पर भेद

अकर्मक और सकर्मक क्रिया – किसी क्रिया के करने हेतु कर्म की आवश्यकता/संभावना होने या न होने के आधार पर क्रिया के मुख्यतः दो भेद है – सकर्मक और अकर्मक।

(क) अकर्मक क्रिया

जिस वाक्य मे क्रिया का फल कर्म पर न पडकर केवल कर्ता पर ही पडता है अर्थात् जिस क्रिया के करने मे कर्म की आवश्यकता ही नही होती है, बिना किसी कर्म के क्रिया सम्पन्न हो सकती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते है, जैसे –

- रमा सोती है।
- नरेश दौड रहा है।
- चिड़िया उड़ रही है।
- बच्चा रोता है।

उपर्युक्त वाक्यों मे 'सोती है', 'दौड रहा है', 'उड रही है', 'रोता है' क्रियाओं के फल का प्रभाव क्रमशः रमा, नरेश, चिडिया और बच्चा कर्ता–पदों पर ही पडता है और ये क्रियाएँ बिना किसी कर्म के केवल कर्ता के द्वारा ही सम्पन्न हो सकती है।

अकर्मक क्रिया को भी पुनः दो भेदों में बाँट दिया जाता हैं।

(i) अपूर्ण अकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ किसी कर्म की तो आवश्यकता नहीं होती पर किसी पूरक शब्द की आवश्यकता होती हैं। वह अपूर्ण अकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

नोट – लगना, होना, निकलना ये अपूर्ण अकर्मक क्रिया को प्रदर्शित करने वाली क्रियाएँ हैं।

जैसे –

- भेड़ प्यासी थी।
- मैं एक छात्र हूँ।

} होना

- वह बड़ा ईमानदार निकला।
- वह डरावना लगता हैं।

} लगना, निकलना

(ii) पूर्ण अकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ कर्म व पूरक शब्द दोनों की आवश्यकता न हो, वह पूर्ण अकर्मक क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- कोयल कूक रही हैं।
- बच्चा रो रहा हैं।
- तोता आसमान में उड़ता हैं।

नोट – पूर्ण अकर्मक क्रिया में क्या शब्द से प्रश्न किए जाने पर कोई भी काल्पनिक उत्तर नहीं निकलता हैं।

(ख) सकर्मक क्रिया

जहाँ क्रिया के घटित होने की प्रक्रिया मे कर्म की आवश्यकता होती ही है, उसे सकर्मक क्रिया कहते है। सकर्मक क्रिया कर्म के बिना सम्पन्न हो ही नही सकती, जैसे –

1. राम पत्र लिखता है।
2. लडके ने बेर खाए।
3. मोहित पानी पीता है।
4. अध्यापक प्रश्न पूछते है।

उपर्युक्त वाक्यों मे 'लिखना', 'खाना', 'पीना', 'पूछना' क्रियाओं का प्रभाव क्रमशः पत्र, बेर, पानी व प्रश्न कर्मपदों पर पड रहा है, क्योंकि इनके बिना क्रिया पूर्ण हो ही नहीं सकती, अतः ये सकर्मक क्रियाएँ है। सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया से पहले 'क्या', 'किसको' लगाकर प्रश्न पूछा जाता है और उसका कोई–न–कोई उत्तर अवश्य आता है और वह उत्तर ही कर्म होता है, और वह क्रिया सकर्मक होती है, राम क्या लिखता है? (पत्र), लडके ने क्या खाए? (बेर), मोहित ने क्या पिया? (पानी)।

(i) अपूर्ण सकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ कर्म के अलावा भी किसी पूरक शब्द की आवश्यकता बनी रहती हैं, तो वहाँ अपूर्ण सकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

जैसे –

- हमने उसे सरपंच **बनाया**।
- मैं उसे बहन **मानता हूँ**।
- हम उसे ईमानदार **समझते हैं**।

पहचान – अपूर्ण सकर्मक क्रिया की श्रेणी में चयन (बनाना), चुनना, मानना, समझना आदि क्रियाएँ वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होती हैं।

(ii) पूर्ण सकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ केवल कर्म की ही आवश्यकता पड़ती हैं, अन्य किसी पूरक शब्द की नहीं, वहाँ पूर्ण सकर्मक क्रिया होती हैं।

जैसे –

- बच्चा खेल रहा हैं। (क्रिकेट)
- तुमने जीता। (मैच)
- तुमने रोका। (रास्ता)

पहचान – वाक्य में प्रयुक्त किसी क्रिया वाचक शब्द से पहले **क्या** शब्द से प्रश्न करने पर यदि उसका कोई काल्पनिक उत्तर प्राप्त हो जाता हैं, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया पूर्ण सकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

पूर्ण सकर्मक क्रिया के पुनः दो उपभेद कर दिये जाते हैं।

(i) एक कर्मक क्रिया
(ii) द्वि कर्मक क्रिया

(i) एक कर्मक क्रिया

जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त हो, उसे एक कर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे – 'माँ पढ़ रही हैं।' (यहाँ माँ के द्वारा एक ही कर्म पढ़ना हो रहा हैं।)

- उसने सेब व संतरे खरीदे।
- मैनें गाड़ी खरीदी।

} कर्म खरीदना

पहचान – यदि किसी वाक्य में केवल क्या प्रश्न का ही उत्तर प्राप्त हो रहा हो, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया एक कर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

(ii) द्वि कर्मक क्रिया

जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म प्रयुक्त हो, उसे द्वि कर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे – अध्यापक छात्रों को कम्प्यूटर सिखा रहे हैं।

क्या सिखा रहें हैं? – कम्प्यूटर, किसे सिखा रहे हैं? (छात्रों को) (छात्र सीख रहे हैं) इस प्रकार दो कर्म एक साथ घटित हो रहे हैं।

- सुमन अपनी बहन को हिंदी सिखाती हैं।
- अध्यापक ने छात्रों को हिंदी पढ़ाई।

पहचान – जब किसी वाक्य में किसे, क्या, किसको इन सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो रहें हो, तो वहाँ प्रयुक्त किया द्विकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

- द्विकर्मक क्रिया में प्रथम कर्म अप्राणीवाचक (निर्जीव) तथा द्वितीय कर्म प्राणीवाचक (सजीव) होगा।

क्रिया की पूर्णता के आधार पर भेद

अपूर्ण क्रिया –

कुछ क्रियाओं का अपने–आप में अर्थ पूर्ण ही नही होता, इसलिए अर्थ पूर्ण करने के लिए किसी अन्य 'पूरक' शब्द पर निर्भर होना होता है जो क्रिया न होकर संज्ञा या विशेषण पद होता है, ऐसी क्रियाओं को अपूर्ण क्रिया कहते है, अर्थात् क्रिया अपना अर्थ स्वयं न देकर संज्ञा, विशेषण पद से ही दे पाती है, जैसे–

- अजीत श्याम को मूर्ख समझता है। ('मूर्ख'– विशेषण के बिना क्रिया 'समझता है' का अर्थ स्पष्ट नही होगा।)
- अशाोक जी हमारे गुरु थे। (गुरु–संज्ञापद के बिना 'थे' का अर्थ स्पष्ट नही होता।)

स्पष्ट है कि इन वाक्यों मे प्रयुक्त पूरक (मूर्ख, गुरु–दोनो संज्ञापद) का लोप कर देने से वाक्य मे पूर्णता नही आती। ऐसे पूरक कर्मपूरक कहे जाते है, जो विशेषण और संज्ञा दोनो ही हो सकते है।

पूर्ण क्रिया –

जिस क्रिया–पद से क्रिया का अर्थ स्पष्ट हो जाए, पूरक के रूप मे गैर–क्रियापद (संज्ञा–विशेषण) की आवश्यकता नही हो, उसे पूर्ण क्रिया कहते है, जैसे–

1. लडका सोता है।
2. लडका पढता है।

यहाँ 'सोता है', 'पढता है' क्रियापद से पूर्ण अर्थ निकल जाता है। ये दोनो पद क्रियापद ही है। अतः ये पूर्ण क्रियाएँ है।

ध्यान देने योग्य बातें – हिंदी में निम्न **सोलह क्रियाएँ** ऐसी क्रियाएँ हैं, जिनके साथ दोनों कर्म प्रयुक्त किये जाते हैं। अतः इन्हें नित्य द्विकर्मक क्रिया माना जाता हैं।

1.	दुहना	2.	माँगना
3.	पकाना	4.	सजा देना
5.	रोकना	6.	पूँछना
7.	चुनना	8.	कहना
9.	उपदेश देना	10.	जीतना
11.	मथना	12.	चुराना
13.	ले जाना	14.	हरण करना
15.	खिंचना	16.	ढ़ोना

क्रिया की संरचना के आधार पर भेद

प्रेरणार्थक क्रिया

जहाँ कर्ता खुद क्रिया को न करके दूसरे को क्रिया करने की प्रेरणा देता है, वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है। यहाँ कर्ता भी क्रिया तो करता है किन्तु वह प्रेरणा देने की क्रिया करता है। प्रेरणार्थक क्रियाओं मे 'वा' लगता है।

सरपंच ने गाँव में तालाब बनवाया।

नोट – इसमें सरपंच ने स्वयं कार्य नहीं किया, बल्कि अन्य लोगों को प्रेरित कर उनसे तालाब का निर्माण करवाया, अतः यहाँ प्रेरणार्थक किया हैं।

- नरेश ने नाई से बाल कटवाए।
- सुनीता ने अर्चना से पत्र लिखवाया।
- मोहन ने माली से दूब कटवाई।

सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक होती है।

मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया

मुख्य क्रिया के अर्थ को पूरा करने मे सहायता करने वाला क्रियापद सहायक क्रिया कहलाता है, जैसे –

- मै गया हुआ था। (यहाँ गया मुख्य क्रिया है तथा हुआ था सहायक क्रिया है ।)
- सुरेश सुन रहा था। (सुन– मुख्य क्रिया है तथा रहा था– सहायक क्रियाएँ)

नामधातु क्रिया

जब संज्ञा एवं विशेषण अर्थात् नामपद शब्दों के अंत मे प्रत्यय जोडने पर किसी क्रिया का निर्माण होता है, तब वह नाम धातु क्रिया होती है। जैसे –

- सेठ ने मकान हथियाया। (हाथ–संज्ञापद)
- मुझ पर दृश्य फिल्माया। (फिल्म–संज्ञापद)
- लडकी बतियाई। (बात संज्ञापद)

हाथ (संज्ञा) – हथिया (नाम धातु) हथियाना (क्रिया)
अपना (सर्वनाम) – अपना (नाम धातु) अपनाना (क्रिया)
जैसे – रोहित, सुनीता के विवाह की जिम्मेदारी को अपना चुका हैं।

संज्ञा से निर्मित नामधातु		**सर्वनाम से निर्मित नामधातु**	
हाथ	– हथियाना	अपना	– अपनाना
लाज	– लज्जाना	**विशेषण से निर्मित नामधातु**	
बात	– बतियाना	ठण्डा	– ठण्डाना
लात	– लतियाना	साठ	– सठियाना
रंग	– रंगना	गर्म	– गर्माना
शर्म	– शर्माना		

पूर्वकालिक क्रिया

जब कर्ता एक कार्य समाप्त कर दूसरा कार्य आरम्भ करता है, तब पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। पूर्वकालिक क्रिया के अंत मे कर लगता है– सोकर, उठकर, जाकर आदि।

- बच्चे दूध पीकर सो गए।
  (सोने से पहले दूध पीया।)
- रमेश खाना खाकर विद्यालय गया।
- रमेश खाना खाने के बाद विद्यालय गया।

लेकिन 'रमेश ने खाना खाया और उसके बाद विद्यालय गया' वाक्य मे पहली क्रिया पूर्वकालिक नही है, बल्कि दोनो ही क्रियाएँ स्वतंत्र क्रियाएँ है क्योकि दोनों क्रियाएँ दो अलग–अलग उपवाक्यों की क्रियाएँ है।

तात्कालिक क्रिया

यह क्रिया भी मुख्य क्रिया से पहले सम्पन्न हो जाती है। इसमें और मुख्य क्रिया में समय का अंतर नही होता, किन्तु पहली क्रिया के घटने के तत्काल बाद दूसरी क्रिया के घटने का बोध होता है जो 'ही' निपात से संभव होता है।

- वह खाना खाते ही (तात्कालिक क्रिया) सो गया।
- वह नहाते ही (तात्कालिक क्रिया) मंदिर चला गया।

संयुक्त क्रिया

जब दो या दो से अधिक क्रिया–धातुओं के योग से क्रियापद बनता है तो उसे संयुक्त क्रिया कहते है। संयुक्त क्रिया मे कई क्रियाओं के संयुक्त हो जाने से एक क्रिया का अर्थ निकलता है, जैसे –

- वह खाना खा चुका होगा।
- पानी बरसने लगा है।
- मै यहाँ रोज आ जाया करता हूँ।
- दोपहर में लोग सो रहे होते है।

इन सभी वाक्यों में पहला क्रियापद मुख्य क्रिया है तथा बाद के सभी क्रियापद सहायक क्रियाएँ है और मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रियाओं को मिलकर बने क्रियापद–समूह संयुक्त क्रियाएँ है। सहायक क्रिया एक भी हो सकती है। (पढता है) और एक से अधिक भी जैसा कि ऊपर के वाक्यों में है।

विशेष

(1) यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त कोई क्रिया स्वतः घटित हो रही हो तो वहाँ उस क्रिया को अकर्मक क्रिया माना जाता है –

जैसे – पेड से पत्ता गिर रहा है।
बूंद–बूंद से घडा भरता है।

(2) यदि किसी वाक्य में गत्यार्थक क्रिया का (आना, जाना, चलना) प्रयोग हो रहा है एवं उसके साथ वाक्य में आने/जाने/चलने का स्थानवाचक शब्द भी लिखा हो तो वहाँ इन क्रियाओं का सकर्मक माना जाता है।

जैसे – बच्चा घर गया।
वह स्कूल आ रही है।

काल के आधार पर क्रिया

जिस काल के अनुसार क्रिया सम्पन्न होती हैं, उसके अनुसार क्रिया के **तीन भेद** हैं।

1. भूतकालिक क्रिया
2. वर्तमान कालिक क्रिया
3. भविष्यत् कालिक क्रिया

1. भूतकालिक क्रिया – क्रिया का वह रूप जिससे बीते समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता हैं, भूतकालिक क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- वह विद्यालय चला गया।
- उसने बहुत सुंदर गीत गाया।

2. वर्तमान कालिक क्रिया – क्रिया का वह रूप जिसमें वर्तमान समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता हैं, वर्तमान कालिक क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- अनुष्का अखबार पढ़ रही हैं।
- अनिल हॉकी खेल रहा हैं।
- सुमित खाना खा रहा हैं।

3. भविष्यत् कालिक क्रिया – क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा आने वाले समय में कार्य सम्पन्न होने का बोध होता हैं, उसे भविष्यत् कालिक क्रिया कहते हैं।

जैसे –

- रेखा द्वितीय श्रेणी अध्यापक परीक्षा की तैयारी करेगी।
- हरीश दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेगा।
- कविता सर्दी की छुट्टियों में ननिहाल जाएगी।

अन्य क्रियाएँ

1. सामान्य क्रिया – जब किसी वाक्य में एक ही धातु से बनी हुई किसी अकेले क्रिया का प्रयोग हो रहा हो, तो वहाँ वह सामान्य क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- राकेश दिल्ली गया।
- सुमन खाना बनाएगी।
- रेखा ने गीत गाया।

2. सजातीय क्रियाएँ – जिस क्रिया के साथ उससे बनी हुई भाववाचक संज्ञा का कर्म के रूप में प्रयोग होता हैं, उसे सजातीय क्रिया कहते हैं।

अर्थात् – जब किसी वाक्य में कर्म एवं क्रिया पद दोनों एक ही धातु के बने होते हैं, वहाँ प्रयुक्त क्रिया सजातीय क्रिया कहलाती हैं।

18 CHAPTER

Time and Tense (समय और काल)

Tense (काल) :- Tense किसी कार्य के समय एवं अवस्था को व्यक्त करता है ।

- Tense किसी भी वाक्य को structure प्रदान करता है। जबकि time से उसी वाक्य का समय के आधार पर उचित कार्य निकाला जाता है ।

Tense

- Present Tense
- Past Tense
- Future Tense

- Indefinite
- Continuous
- Perfect
- Perfect Continuous

- **Verb** को व्यक्त करने का चिह्न :–

V^1 = (Present Form) = Go

V^2 = (Past Form) = Went

V^3 = (Participle) = Gone

V^4 = (V^1 + ing) = Going

V^5 = (V^1 + s/es) = Goes

1. Present Tense

(1) Present Indefinite/Simple Present -

Sub + V^1/V^5 + Obj.

Use of present indefinite tense :-

(a) Habitual or regular or repeated action को express करने में

Eg :-

(1) I live at Jaipur.

(2) Sweta and Anshu are dancers.

(b) Universal truth तथा permanent activities में,

Eg :-

(1) The sun rises in the east.

(2) Man is mortal.

(c) fudV समय में fixed program तथा Fixed plan के संदर्भ में–

Eg :-

(1) The PM comes here tomorrow.

(2) The college reopens in October.

(d) आँखों देखा हाल का प्रसारण (मैच, आयोजन, कार्यक्रम, नाटक आदि) में–

Eg :-

(1) Ganguli runs after the ball.

(2) Virat hits a four.

(e) Author के statement को express करने के लिए–

Eg:-

(1) Keats says, "A thing of beauty is a jo forever".

(f) History की घटना को जीवंत या ताजा बनाकर दिखाने में–

Eg:-

At last, Ram kills Ravan.

(g) ऐसे वाक्य जिससे स्थायी कार्य (Permanent Activity) या स्वभाव (Nature) का बोध हो, तो चाहे वह किसी काल की बात करे, तो उसमें Present Indefinite का प्रयोग होता है।

Ex:-

(1) We work with our hand

(2) We hear with our ears.

(2) Present Continuous

Sub. + is/am/are + V^4 + Object.

Uses

Toppersnotes Unleash the topper in you

(a) ऐसे कार्यो के लिए जो बोलने के वक्त जारी हो–

Eg :-

(1) Mukesh is coming now.

(2) They are playing.

(b) निकट भविष्य के Fixed program of plan तथा जो future tense का बोध कराता हो–

Eg :-

(1) He is going to Chennai tonight.

(2) I am leaving for Patna next month.

(c) See, Hear, Smell, Notice, Recognize, Taste, Appear, Seem, Look, Love, Hate, Detest, Dislike, Hope, Doubt, Admit, Wish, Intend, Believe, Know, Have, Comprise, Include etc. के साथ Present Continuous नहीं बनता है।

Eg :-

(1) She is knowing him very well. (×)
She knows him very well. (✓)

(2) He is owning a scooter. (×)
He owns a scooter. (✓)

(3) Present Perfect -

Sub. + has/have + V^3 + Object.

Uses

(a) ऐसे कार्यो के लिए जो तुरन्त समाप्त हुए है–

Eg :-

(1) She has written a letter.

(2) I have just bought a pen.

(b) जो कार्य Past में start हुए हो व अब भी जारी है।

Eg :-

(1) I have lived in this house since 1999.

(2) She has been ill since Friday.

(c) इस Tense में निम्नलिखित Adverbs/Adverbial phrases का प्रयोग होता है –

Ever, Never, Always, Occasionally, Often, Several Times, Already, Yet, Just, Lately, Recently, So far, Up to now, Up to the present, Since, For etc.

Eg :-

(1) For → Period of time [for 4 days, for 3 months etc.]

(2) Since → Point of time [since Monday, since morning]

(4) Present Perfect Continuous

Subject + has/have + been + V^4 + obj. + For/since + time.

Uses -

(a) ऐसे कार्य जो Past में प्रारम्भ हुआ और अभी तक जारी है–

Eg :-

(1) She has been reading a novel since morning.

(2) I have been teaching in the school for five years.

2. Past Tense

(1) Past Indefinite/Simple past - Subject + V^2 + Object.

Uses

(a) जो कार्य किसी निश्चित समय में घटित हुआ या समाप्त हुआ हो–

Eg :-

(1) He went to Mumbai yesterday.

(2) The building was built in 1999.
Time expressing words- yesterday, The day before yesterday, The other day, Ago, Last morning, Last day, Last week, In march 1942 etc. प्रयोग होते है।

(b) Past habitual actions को दर्शाने के लिए– Seldom, Always, Used to, Daily, etc. शब्द आते है।

Eg :-

(1) He went on Sundays.

(2) In my childhood, I played cricket.

(3) Gandhiji used to spin in the afternoon.

(c) It is time, it is high time, It is about time etc. के बाद simple past का प्रयोग होता है ।

Eg :-

(1) It is time you studied.

(2) It is high time she left for the bus stop.

(d) Suppositional sentences :- प्रायः If, as if, as though, if only, I wish, we wish, he wishes, she wishes, they wish आदि से स्टार्ट होने वाले वाक्यों में Simple past का प्रयोग किया जाता है ।

Eg :-

(1) I wish I were the CM of Rajasthan.

(2) He talks as if he were my master.

(e) bl Tense से भूतकाल में कार्य करने की आदत का बोध होता है अर्थात् यह बोध होता है कि कोई कार्य बराबर होता था ।

Ex :-

(1) He always helped me.

(2) He never touched wine.

(2) Past Continuous - Subject + was/were + V^4 (V^1 + ing) + Obj.

Uses -

(a) Past में जारी कार्यो के लिए

Eg :-

(1) They were reading a notice.

(2) I was writing this book yesterday morning.

(b) tc दो कार्य Past में एक ही समय पर हो रहे हो तो दोनों के लिए Past Continuous का प्रयोग होता है ।

Eg :-

(1) While my brother was singing, I was sleeping.

(2) While I was writing this chapter, my wife was watching TV.

(c) Get, become, grow –verb किसी कार्य में दिनोंदिन वृद्धि या कमी दर्शाये तो Past Continuous tense का प्रयोग किया जाता है ।

Eg :-

(1) He was becoming poorer and poorer.

(2) It was getting darker and darker.

(3) Past Perfect - Sub. + had + V^3 + Obj.

Uses

(a) अगर दो कार्य Past में एक के बाद एक हो तो पहला कार्य past perfect में और दूसरा कार्य simple past में होगा–

Eg :-

(1) The bell had rung before I reached the school.

(2) When she reached there, the dinner had started.

(b) I wish, we wish, he wishes, she wishes, they wish, as if, as though ... etc. के बाद काल्पनिक तथ्यों का वर्णन करने में–

Eg :-

(1) She wishes she had been born in 1948.

(2) She talks to me as if she had come from the film industry.

(c) Before and After का प्रयोग–

1st action	Before	2nd action
Past perfect		Simple past

2nd action	After	1st action
Simple past		Past Perfect

Eg :-

(Past perfect)

(1) I had seen him before he stopped his car.

(Simple past)

(Simple perfect)

(2) I met him after I had finished my work.

(Simple past)

(d) Verbs- hope, expect, think, mean, intend, suppose, want आदि past में किसी कार्य के होने की उम्मीद की गयी पर पूरा न हुआ के अर्थ में आते हैं–

Eg :-

(1) I had hoped that he would come to see my daughter.

(2) He had wanted to see me but unfortunately he fell ill.

(4) Past perfect continuous :- Subject + had been + V^4 + obj. + For/since + time.

Uses -

(a) Past में जारी चल रहे किसी कार्य के लिए–

Eg :-

(1) I had been reading a novel since 2008.

(2) She had been singing a song.

3. Future Tense

(1) Future Indefinite/Simple future - Subject + Shall/will + V^1 + Obj.

Uses -

(a) सामान्य रूप से भविष्य में होने वाले कार्यों के लिए–

Ex :-

(1) He will help you.

(2) I Shall meet you.

(b) Future में होने वाले actions को express करने के लिए निम्नलिखित structure-

Sub. + has/have + infinitive.

Eg :-

(1) I have to pay the fees. (Future)

(2) He has to come in time. (Future)

Sub. + is/am/are + going + infinitive.

Eg :-

(1) I am going to write several books.

(2) He is going to buy a motorcycle tomorrow.

(2) Future Continuous : - Subject + shall/will + be + V^4 (V^1 + ing) + obj.

Uses -

(a) Future में जारी रहने वाले कार्यो के लिए–

Eg :-

(1) He will be playing cricket tomorrow morning.

(2) She will be staying there.

(3) Future Perfect :- Subject + shall/will + have + V^3 + Obj.

Uses -

(a) Future में किसी निर्धारित समय तक समाप्त होने वाले कार्यो के लिए–

Eg :-

(1) He will have finished his work before Monday.

(2) By this time next year I shall have watched the film.

(b) संभावना (likelihood) और अनुमान (inference)को अभिव्यक्त करने के लिए–

Eg :-

(1) You will have heard the name of Mother Teresa.

(2) You will have read the Gita.

(4) Future perfect continuous :- Sub. + Shall/will + Have been +V^4 + Obj.

Uses -

(a) Future में किसी निश्चित समय तक जारी कार्यो के लिए–

Eg :-

(1) Lata will have been singing from morning.

(2) By the end of this month I shall have been teaching have for five year.

19 CHAPTER

ARTICLE (लेख)

Article

Indefinite - A/An | **Definite – The**

Position of Article

1. Noun से पहले
   जैसे –
   He has an umbrella.
   Noun
2. Adjective से पहले
   जैसे –
   Monika has a long stick.
   Adjective
3. Adverb + Adjective + Noun से पहले
   जैसे – She is a very beautiful girl.
   Adv. Adj. N.
4. All/both + double + ….. + Noun के बीच में
   जैसे – All the girls.
   Double the amount.

A and An का प्रयोग

- A/An का प्रयोग अनिश्चित Singular Noun से पूर्व करते है ।
  Eg:- I have a car.
  This is an orange.
- यदि किसी शब्द के उच्चारण की प्रथम ध्वनि व्यंजन हो तो → A, एवं स्वर हो तो → An
  जैसे –
  An umbrella [word में प्रथम अक्षर Vowel होने पर भी ध्वनि स्वर की है ।]
  A union [word में प्रथम अक्षर Vowel होने पर भी ध्वनि व्यंजन की है ।]
  A one rupee note [vowel होने पर भी ध्वनि व्यंजन की है ।]
  An honest man [व्यंजन होने पर भी ध्वनि स्वर की है ।]
- Vowel से प्रारम्भ होने वाले वाक्यों में an लगता है।
  An inkpot
  An apple
- जब u अक्षर 'यू' ही पढा जाऐ तो a लगता है ।
  A European
  A useful
  A uniform
- जब o अक्षर को 'व' पढा जाये तो a लगता है ।
  A one eyed boy
  A one handed girl
- जब h अक्षर 'अ' पढा जाऐ तो an लगता है ।
  An hair
  An M.A.
  An L.L.B
- जब किसी verb को noun के रूप में प्रयोग करते हैं तो उससे पहले A या An लगता है ।
  Ex:- He goes for a walk.
  She goes for a swim.
- जब Exclamatory sentence what या How से प्रारम्भ हो तो Singular countable noun से पूर्व A का प्रयोग होता है ।
  Ex:- What a hot day.
  How find a day.
- Singular countable noun से पूर्व
  Eg:- I have a pen.
  Exclamatory वाक्यों में what/how के बाद
  Eg:- What a grand building.

Unleash the topper in you

- कुछ गिनती बताने वाले शब्द जैसे – hundred, thousand, million, dozen, couple से पहले 'a' लगता है ।

  Eg:- A dozen pencil were bought by her.
- Half से पूर्व 'a' का प्रयोग किया जाता है ।

  Eg:- $2\frac{1}{2}$ meter two and a half merter.
- कुछ विशेष Phrases में A/An का प्रयोग

  In a fix, in a hurry, in a nutshell, make a noise, make a foot, keep a secret, as a rule, at a stone's throw, a short while ago, at a loss, take a fancy to, take an interest in, take a liking, a pity, tell a lie.

Omission of A/An -

(a) Plural noun से पूर्व नहीं किया जाता है ।

Eg:- A boys have come. (×)

(b) Uncountable noun से पूर्व

'The' का प्रयोग :–

(1)

Name of rivers	The Ganga
News papers	The Amar Ujala
Unique things (अद्वितीय)	The Earth, The Moon
Historical building	The Taj Mahal
Superlative degree	The best
Holy books	The Ramayan
Post	The Secretory, The D.M.
Nationality	The Indian
Ordinal Numbers	The First, The Second
Musical Instrument	The Tabla, The Flute
Mountain	The Himalyas

(2) Cinema, Theatre, Circus, office, Picture, Station, bus stop से पूर्व The Article लग जाता है ।

Ex:- My friend go to the theatre today.

(3) जब Proper noun या common noun बनाया जाता है तो The Article लग जाता है ।

Ex:- Kalidas is the Shakespeare of India.

(4) The का use किसी देश के नाम से पूर्व नहीं होता है but यदि country के नाम के साथ Republic/Kingdom/States जुड़ें हो तो इससे पूर्व The Article लग जाता है ।

Ex: - He visited India and United states. (×)

He visited India and the United states. (✓)

(5) Sky, Moon, World, Sea, से पूर्व The Article लग जाता है ।

Ex:- The sky is dark and the moon is shining.

(6) जब Adjective का use noun की भाँति होता है तो उससे पूर्व The Article लग जाता है ।

Ex:- Rich should help poor. (×)

The Rich should the help poor. (✓)

(7) जब Comparative degree से पूर्व कोई selection कराना हो तो उसके पूर्व The Article लग जाता है ।

Ex:- He is stronger of the two. (×)

He is the stronger of the two. (✓)

(8) जब कोई वस्तु Understood होती है तो उससे पूर्व 'The' का प्रयोग होता है ।

E.g:- Kindly return the book. (That I gave you)

Can you turn off the lights ? (The light in the room)

(9) Ordinal से पूर्व 'The' का प्रयोग किया जाता है। (First, second, third, ...)

E.g:- The second chapter of this book is very difficult.

(10) Adjective 'same' एवं 'whole' के पहले और 'all' एवं 'both' के बाद article 'The' का प्रयोग होता है।

Eg:- He is the same boy that met me in the market.

The whole period was wasted.

Omission of 'The'

(1) Name of games, Name of Subjects से पूर्व the article नहीं लगाते है।

Ex:- I play the cricket. (×)

I play cricket. (✓)

(2) Proper noun से पूर्व The article नहीं लगाते है।

Ex:- Shakespeare was the greatest dramatist. (✓)

(3) Before Material Noun

Ex:- Gold is the most Precious metal. (✓)

The Tea grows in India. (×)

Tea grows in India. (✓)

Particular sens e में

Ex:- The tea of Assam is very famous. (✓)

Ex:- Water of the ganga is sacred. (×)

The Water of the Ganga is sacred. (✓)

(4) Before Abstract noun (भाववाचक संज्ञा)

Ex: - The virtue is its own reward. (×)

Virtue is its own reward. (✓)

Ex: - The love is a natural feeling. (×)

Love is a natural feeling. (✓)

Exception

Particular sense में

Ex:- Honesty of Ram cannot be doubted. (×)

Ex:- The honesty of Ram cannot be doubted. (✓)

He speaks the truth. (✓)

(5) Before languages :-

Ex:- The english is spoken all over the world. (×)

English is spoken all over the world. (✓)

Particular sense में

Ex:- He knows the Sanskrit language.

(6) School, college, home, church, temple, sea, burnt, bed, table, hospital, market, prison, court के पहले The article नहीं लगाते है।

Ex:- I go to the bed early. (×)

Ex:- I go to bed early. (✓)

(7) Name of disease के पहले The article नहीं लगाते है।

Ex:- He died of the cholera. (×)

Ex:- He died of cholera. (✓)

Note: - But the rickets, the plague, the flu, the mumps, the measles are correct.

(8) Regular meals के पहले The article नहीं लगाते है।

Ex:- I take the breakfast. (×)

Ex:- I take breakfast. (✓)

Particular sense में

Ex:- The lunch that was served to the guests was delicious. (✓)

(9) Parts of body, mode of travel के पहले The article नहीं लगाते है।

Ex:- The liver is the largest organ of human body. (✗)

Ex:- Liver is the largest organ of human body. (✓)

Ex:- He will go there by the bus. (✗)

Ex:- He will go there by bus. (✓)

(10) The name of relations के पहले The article नहीं लगाते है ।

Uncle/mother, father

Ex:- Father will go to Delhi tomorrow.

Toppersnotes
Unleash the topper in you